THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

जीवन एक सरकस नहीं है, विशेष रूप से वाहन चलाते समय

Life is not a circus, especially while driving

Author – Lois Carlson

The Christian Science Sentinel Vol. 112, No. 03/04, Jan 18 & 25, 2010

चौंक गया, इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं कहूँगा, मुझे महसूस हुआ जब मेरे एक आध्यात्मिक सलाहकार ने मुझे बिना भावुक होते हुए कहा "मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर* हमें एक समय पर केवल एक काम करने के लिए कहते हैं।"

मेरे कान खड़े हो गए क्योंकि मैं सम्भवत: घड़ी की तरफ देख रही थी, अपने बेटे को स्कूल से लेने के लिए, एक ग्राहक के फोन का जवाब देने के बाद और यह पक्का करते हुए कि रात्रि का भोजन मेज पर लग जाएगा, जब मैं खाने के कमरे की मेज पर सारी जगह फैले हुए एक चर्च के काम को करने के बाद उठूँगी। एक समय पर एक काम करो? हाँ ! मैं एक ही समय पर हवा में बहुत सारी गेंदें उछालने पर अपने आपको गर्वित महसूस कर रही थी।

और यह सैल फोनस के आने से पहले की बात है।

उन दिनों मैने वाहन चलाते समय (स्पीकर फोन के साथ) वह फोन कॉलस की जिन्हें मैं बहुत महत्वपूर्ण समझती थी। परन्तु मैं इन्हें करने की आवश्यक्ता पर बहुत अधिक प्रश्नचिन्ह लगा रही थी। क्या यह अच्छा होता यदि यह नियमित क्रिया की बजाए कभी–कभी होता। क्योंकि एक समय पर बहुत सारे काम करने की प्रबलता से जीवन, परमेश्वर के साथ जुड़े हुए अनुभव की बजाए एक तीन छल्लों वाली सरकस की तरह बन जाता है।

परमेश्वर के बच्चे होने के नाते हम स्वभाविक तौर पर आत्मा की आंतरिक चीज़ो को, उस भौतिकता से, अधिक प्रेम करते हैं, जो हर मोड़ पर चिल्लाती है।

क्रिश्चियन साँयस व्याख्या करती है कि परमेश्वर जीवन का एक महान् दिव्य सिद्धान्त है, जो केवल जीवन का निर्माता ही नहीं बल्कि इसका रक्षक भी है। परमेश्वर ने विचारों के इस अद्भुत ब्रह्माण्ड को बहुत कम समय में बहुत अधिक काम करने के जोश में खण्डित होने के लिए नहीं बनाया। परमेश्वर की रचना उतनी ही लयबद्ध है जितना कि सूर्योदय, उतना ही प्रगतिशील अतिसम्मोहक जितना पतझड़, उतने ही सही रूप से व्यवस्थित जैसे तरबूज के बीज। यह एक वादा है कि आदमी औरतें और बच्चे उसी दिव्य समनव्यता से लिप्त होकर रह सकें।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

इस अखबार की संस्थापिका, एक औरत, जो कई उपलब्धियों और परमेश्वर की स्थायी समझ वाली है, लिखती है – "सारी कुदरत परमेश्वर के मानव के प्रति प्रेम के बारे में सिखाती है, परन्तु मानव परमेश्वर को परम प्रेम नहीं कर सकता ओर न ही अपना सम्पूर्ण स्नेह, आध्यात्मिक चीजों पर लगाता है, आध्यात्मिक की बजाए भौतिकता से प्रेम करते हुए या यकीन करते हुए। (साँयस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 326) मेरी बेकर एडी के लेखन आग्रह करते हैं कि परमेश्वर के बच्चे होने के नाते, हम स्वभाविक रूप से हर मोड़ पर चिल्लाने वाले भौतिकवाद से ज्यादा आत्मा की आंतरिक वस्तुओं से प्यार करते हैं।

क्या वास्तव में वाहन चलाते समय सड़क पर चलती हुई कारों के समन्वय को सम्मान देने की बजाए अतिरिक्त फोन कॉलस करना ज्यादा महत्वपूर्ण है। क्या ऐसा नहीं होगा कि कार में उन शांत क्षणों को संजोते हुए हम अपनी मंजिल पर ज्यादा ताजा पहुँचेगे, ज्यादा तत्पर होंगे उस व्यवसाय में भाग लेने के जो हमारे हाथ में है या हमारे परिवार के इक्ट्ठे होने पर? ज्यादा आनंदित होंगे क्योंकि हम अपने आस पास की सुन्दर रचना पर ध्यान देते हैं और उसके स्रोत का सम्मान करते हैं?

अपनी एक पुस्तक में श्रीमति एडी ने परमेश्वर के जीवन को संचालित करने में हस्तक्षेप करने पर विनाशकारी प्रभावों का उल्लेख किया है। तब उन्होंने प्रतिकारक के बारे में बताया: "एक थोड़ी सी अधिक सद्भावना, एक प्रयोजन का शुद्ध हो जाना, नम्रता से बोले गए थोड़े से सत्य, एक पिघला हुआ हृदय, एक विनम्र चरित्र, एक समर्पित जीवन, मानसिक प्रक्रिया की सही क्रिया को पुर्नस्थापित कर देगा और परमेश्वर के अनुसार शरीर तथा अन्तश्चेतना की गति को प्रकट करेगा। (**Misc. Writings 1883-1896** पृष्ठ 354)

जैसे कानून बनाने वाले, वाहन चलाते समय सैल्फोनस को प्रयोग में लाने पर प्रतिबंध लगाने पर विचार कर रहे हैं, क्या हम इस चुनौती की गहनता को ढ़ीला छोड़ना स्वीकार कर सकेगें, आत्म कार्य से कम प्रभावित होकर अधिक श्रदालु बन कर – अधिक सचेत कि कैसे ब्राह्मण्ड के रचयिता ने सब कुछ कृपा से नियन्त्रित किया जो हमारे हृदयों को और हमारे दिनों को मृदु बनाता है।

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.